कोराईन डूबा

ज्योति लकड़ा

नदी जीवन की धार है! इसके धारा की कलकल आवाज संगीत है! इसके किनारे-किनारे के पेड़ पौधे जीवंत रूप में हरियाली ओढ़े आशियाने का मूर्त रूप है।

गूं गूं गूँम !

हां हां हॉय !

किलें किलें किलकिल !

ढमें ढमें ढमढम !

गेडों गेडों गेडों गेडों !

झझें झझें झझझझ !

यही गूंज यही आवाज करियो के लिये संगीत है। जो नैसर्गिक रूप से रात दिन चलता रहता है। कोराईन डूबा दह का एक रीत, एक गीत, एक प्रीत, इस दह की समृद्ध परम्परा है। जो अपनी धार में समेटे युगों से चली आ रही है। और कोराईन डूबा अपने आप ही एक कहानी बन गई।

करियो अपने नृत्य अपने गीत में रीति 'समाहित' हुई। युवा जीवन में लोक गीतों के धरोहर को समेटे हुए महान कलात्मकता का रियाज करते-करते कुर्बान हो गई। एक महान परम्परा को जन्म देकर। करियो का प्रेम नैसर्गिक था। उसका प्रेमी सहजू कुवंर निश्छल प्रेम का जीवंत रूप था। उसके संगी-साथी स्वर्ग के अप्सराओं जैसे धरती में स्वर्ग उतार लाए थे।

कनहर नदी झारखण्ड और छतीसगढ़ का सीमांकण करती हुई कई इलाकों से होते हुए जब सलो बढ़नी गांव पहुंचती है तो यहां के उंचे-उंचे विशाल गरिमा स्थापित किये शिला से टकरा जाती है। और इस टक्कर से अनायास ही संगीत की धारा फूट निकलती है। यही करियो और सहजू कुवंर के प्रेम का आशियाना है। सालो बढ़नी गांव जंगलों से घिरा है। यहां साल, महुँआ, केन्दू, पियार, सानन, गंभार के उंचे-उंचे वृक्ष हैं। तो धरती पर बेंदो, केंवटी, जैसे असंख्य लतायें पड़ों की डालियों को झुकाती हवा से बातें करती रहती है। सहजू बहेरा पेड़ की उंची डालियों में लटके बेंदो लताओं से झूले बनाता तो करियो बेंदो पत्तियों से इसे सजाती और आरमदायक बनाती। दोनों झूले में बैठ दूर दूसरे पेड़ पर लटके हुए लता को अपनी ओर जोर लगाकर खींचते व ढील दे देते इससे झूले को गति मिलती। और झूला हवा से बातें करने लगती। घंटों झूला झूलते कई सपने बुनते। 'सहजू' करियो ने घघ की ओर ईशारा करते हुए कहा। अगर इ हमर घर हो तक इहे घरे हामिन दुयो रहती ? सहजू ठठा कर हंसता है। हों हों हों अरे तोंय करियो तोर घर। इ घर तोर त दिन रोते गाते

रहेला। हों हों हों सहजू को इस कदर हंसते देख करियो रूठ जती है। तोय मजाक कर आहीसह अउर मैं सचे कहत आहों । फिर सहजू हंसने लगता है। अरें तोर घरें गात हैं। गाते रहेलों। हों हों हों। करियो इस बार क्रोधित हो जाती है। और कहती है -का भेलक ? गात है। तोंय हों गावले आउर मोय हूँ गावना। ई त सचे आहे। तई मोर घर का ले नी होय सकेला। देईख लेबे इके मैं आपन घर बनाबे करबूं।

मोर घर गात है। गात रही जनम जुगा तोर मोर गीत। करियो को क्या पता था कि भविय किधर मुड़ेगा और अतीत कहां दर्द में डूबा कराहता रहेगा।

१५-१६ वर्ष की चंचल चित कोरवा सुंदरी। अंग प्रत्यअंग गोदना से अलंकृत। मोटे चौड़े होठ,कजरी आंखें, गले में लाल काले धागों से बंधे चांदी के सिक्कों की माला, बागे लारछा केंश, 'सावे घास की तरह बाल' बीच मांग तथा दोनों कनपट्टी के ठीक उपर दर्जनों किलिप गुथे हुए। कानों में बिड़यो, हाथों में लाल लाल चुड़ियॉ। घुटनो तक नीली मंजूर पाड़ साड़ी. जब वह हंसती तो गदराये मकई के दानों जैसे कतार बद्ध दांत दूर से ही दिखई देते।

करियो कनहर नदी के उस पार अपने नानी घर में रहती थी। इसी गंव में सहजू कुवंर भी रहता था। उसके ढेर सारे ढोर डांगर थे। सहजू दिन भर चरवाही करता और संझिया सब को कनहर में पानी पिलाने के बाद हांकते हुए बथान ले जाता क्योंकि जोरी भी तो सहजू को ही जोरना है। भला सहजू के सिवा किसको पता है। किसके संग किसको खूटना है। जोरी जोरने के बाद घर ढुकते सहजू घंड़सरी में रखे भरे घड़े के मुखा को पकड़ जैसे ही झुकाता भरे घड़े से भभके हुए पानी की धर फूटती है। और पानी हच्चाक से नीचे गिरने लगती है। गिरते पानी की आवाज पहचान मा बियारी निकालने लगती है। और जैसे ही सहजू दलान पर बिछी चटाई में बैठता है। मां जौ घाठा मछरी तियन के साथ बियारी परोसती है। इधर दूर से मंदर की धुन सुनाइ पड़ती है। 'भूख दिन जौ घाठा. . भूख दिन जौ।' तो नागाढे से 'देबैं होले खाबूह जून, देबैं होले खाबूह जून' और यह आवज खूंटी में टंगे सहजू के मंदर से टकराती है। और गूंजने लगती है। तो ऐसा लगता है। जैसे यह आवाज खूंटी में टंगे मांदर से ही निकल रही हो। सहजू झटपट खाकर अखड़ा जाने की तैयारी करने लगता है। सबसे पहले वह धोती कसता है। इसके बाद कमर में डड़खर बांधने के लिये बड़े वाले घुघुरों से गुथे चमड़े के पट्टे लेकर पूरे पुठे को ढक कर उसी रस्सी से कमर कसता है। इसके बाद डांग से आधा दर्जन पईजन उतारता है और चटाई पर बैठ दोनों पैरों में तीन तीन पैइजन पहनता है। फिर दोनों पांव में घुघुर बांधता है। दीवाल में टंगे मोर पंखों से बनाये गए झाल पेटी को पीठ में सजाता है। झांपी से नया पंच गजा धोती निकाल सर में लहरदार मुरेठा बाधता है। कमर में नागाड़ा, और गले में मांदर टांगता है। तथा अपने मुरली को मांदर में खोंसते हुए अखड़ा ढहरता है। रस्ते में उसे गुना और धनी मिल जाते हैं। तीनों मंदर में थाप देते हैं। 'मांग जून, मांग जून, देबैं होले मांग जून' करवाते हुए गाणा गाते हैं 'कना कोतर महुवा, खइबे कि खेले चलबे' - 'इधर गाणा सुनकर जोगनी, मोहनी, सुखनी रीझनी करीयो, फूलो, झानो और रनियां अखरा पहुॅच जाती हैं।

शाम होते ही मुरली, ढोल, मंदर, नगड़ा, डफली औार गीतों की लय ताल में शुमार होता गांव का अखड़ा। रशिका रश्किन जुड़ते जाते हैं और अखड़ा जमने लगता है। जैसे-जैसे रात्रि की पहर बीतती गई वैसे ही हर पहर के आधर पर नाच गाने बदलते गए।

यह रात्रि का चौथा पहर है। मां बाप व बच्चे नींद में हैं। बिन्दास गानों के साथ रश्किा रश्किनों को छड़ते हैं।

'काहां कर हकी रौरे ?
कोन बोली बोली ला ?
कां हां कर हकी रौरे ? २
राउर मधुर बोली सुनी
मनो नी भरेला सोनों.
मनो नी भरेलों।

गीतों के लय में ताल देते रशिका खड़े हो डड़खर झोरते हैं। फिर मांदर को तीरछा करते हुए। दो कदम आगे बड़ मदरीये अपने चहेते रशकिनों के करीब जाते हुए झुक कर मांदर में ताल देने लगते हैं। तो नगाड़ा बजाने वाले चउवे में बैठ उचक उचक कर नगाड़े ठोंकते है। और रश्किनो को रिझाते हैं। सतरंगी स्वर में सवार रश्किा रश्किन के थिरकते पांव 'अलबद नजारा' अद्भुत दृश्य पेश करते हैं। और नाचते नचते चौथा पहर बीतने लगता है। पूरब में भूर का तारा उग आया है। सभी को पूर्वत आभाष है। कि अब यही गीत आखरी गीत है। गयारों को गाय खोलना है तो भईसवारों को भैंस क्यों कि यह सीजन गाय बैलों को जंगल में छूट्टा छोड़ने का नहीं है। रश्किा रश्किन आपस में बातें करते हैं। और एक दूसरे से विदा हो घर के लिये डहर हैं।

घर पहुंच कर करियो तुम्बा में पानी भरती है। और कंधे में टांग टोकीं नाचू बिछनी बासन उठाती है। और मकई लाटा खोंयचा में रख अपनी नानी संग महुवा बिनने जाने के लिये पड़ोसीयों को हां लगाते जंगल की राह जाने लगती है। इधर पीछे से फूलो रिझनी सुखनी उनकी भभियॉ और मायें भी साथ हो लेती हैं। चिड़ियों की चहक, कोयल की कुउॅ कुउं के साथ सुबह की शुरूआत होती है। वे कनहर की तराई पार कर जैसे-जैस खैरा पहड़ की ओर बढ़ते हैं। मोर के पेंहों पेंहों तथा बंदरों की हुप हुप की अवाज निकट पहुचती

जाती है। सनसीहार 'हरश्रृगार' और महुआ फूलों की मादक महक वातावरण में मधु रंग घोलने लगते हैं। और उस रंग में रंगी करियो और उसकी सखियां मधुर तान छेड़ती हैं।

'इसन सुंदर धरती के...
के तो बनालैं हईरे ?
इसन सुंदर धरती कें
ईह। छूबे-छूबे-छूबे...
धीरे रसे।

गीत गाते गुनगुनाते सब अपने अपने पांत में महुआ चुनते। गड़हा डीपा लोरंगा सबको एक करते पूरे जंगल में फैल जाती हैं। और कुहकी पार अपने साथयों से संवाद स्थापित करती। बिछनी बासन भरते केंद पियार भेंलवा खाते सब अमझरिया पहुंच कर लाटा, सातु, महुआ, खाकर सुस्ताती हैं। और फिर उठती हैं। और अपना-अपना नाचू बासन मूड़ में बोह रास्ता नापती हैं। तपते रेत से बचने के लिय टायर से बना खरपा या फिर लकड़ी और चोप डोरा से बना खरपा इस वक्त बड़ा काम आता सूरज अभी ठीक माथे पर होती और सब घर ढुकते।

करियो कुछ महुआ फूलों को पकाने के लिये छोड़ बाकी को अंगन में फैला देती है। हाथ मुॅह धोकर रात का पानी बोथा भात कोयनार साग तेतर चटनी के साथ केलवा खाकर भर घामा आराम करती। फिर दिन ढलते ही बटुवा बासन लेकर कनहर नदी जाती बटुवा बासन को खूब रगड़-रगड़ कर चमकाती, कपड़ा कांचती धोती, मुड़मिसनी माटी से नहाती फिर अपने हाथों से चुवां बनाती पानी छींटती और साफ पानी घड़ा और बटुवे में भरती और मुड़ में बटुवा बटुवे के उपर बासन बर्तन कंधे पर कपड़े कांख में घड़ा लेकर घर पहॅुचती है तो घर से अपरीचित आवज सुनाई देती है। दरवाजे के बाहर काला झबरा कुत्ते को बैठे देख करियो तड़ जाती है। कि घर में कोई नया मेहमान आया है। घर ढुकती है। सबके गोड़ लगती है फिर चूल्हा चौका के कामो में जूट जाती है। घर में दो नये मेहमान और पड़ोस के मामा, नाना भी हैं। दलान पर हो रही बातें करियो को भी सुनाई पड़ रही है। करियो के नाना पूछते हैं? 'कईसे आली गोय? अगुवा बुढ़ा-ईहे डगर बेड़ाते बेड़ाते कनहर नदी के सोते सोत आली गोय। नदी कर मछरी कनहों नी बेड़ाय से डहुरा पतई डाबे ढांके के बिचार से आली रउवा मन का सोचिल ? करियो के नाना बेसे करली

नी ढाबले ढांकले मछरी थोरे बासी।' करियो के नाना भी बात दे देते हैं और बात पक्की हो जाती है ।

करियो अपने मन की बात किसी से कह नहीं पाती है। हां आज कल उसके गीतों के द्वारा उसकी आह महसूस की जा सकती है। देखते-देखते समय बीत जाती है। और करियो की शादी माघ महीने में हो जाती। करियो का घर, अखरा, नानी-नाना सब छूट जाता है। करियो के लिये अब फागू ही सब कुछ है। करियो अब मुरली मंगरही गांव की नई पुतोह है। करियो दिन भर फागू के संग उसके कामो में हाथ बटाती जंगल जाती बांस चुन छांट सेट तुन कर सूप, दउरा, नाचू बिछनी बासन बनाती। खाना पानी पतर सब करती पर जाने क्यों शाम होते ही करियो किसी घोर संन्न ताप में घिर जाती। मुरली, ढोल, मंदर, नगाड़ा, डफली की आवाज जैसे ही उसके कानो में सुनाई पड़ती वह घबराने लगती उसका दिल धक धक करने लगता करियो विकल हो जाती वैसे ही जैसे कस्तुरी मृग कस्तुरी गंध में सवार कस्तुरी ढूंढते हुए जंगल-जंगल भटकती रहती है। जिसे वह पाना चाहती है। वह तो उसी के भीतर है। उसी तरह लोक नृत्य लोक संगीत भी करियो की आत्मा है।

रोपा ढोभा खत्म हो जाता है। लोग कर्मा पर्व की तैयारी करने लगते हैं। करियो और फागू भी अपने नानी घर करमा मनने जाते हैं। इधर सहजू को भी मालूम हो जाता है। सुखनी और रिझनी से कि करियो आयी है। करियो का आना सुन सहजू की तड़प व बेकरारी चरम पर है। वह मंदर में थाप देने लगता है और ऐसी शमा बांधता है कि बाकी रश्कि रश्कीन भी उसी सुरताल ताल का अनुश्रन करते हैं। और अखरा से बहने वाला सुर ताल चारों दिशाओं में गुंजार मारने लगता है। लोग अखरा की ओर खिंचे चले आते हैं। करियो भी अखरा जाने के लिये ब्याकूल है। और फागू से कहती है। 'चल नी अखरा जाब। फागू कहता है। तोंय जा मोंय नखों जात। करियो फिर कहती है। तोंय नी जाबे होले मोंय एकले का लखे जाबूं ? सब तोरे के खोजबैं। फागू मोय अखरा जाय के का करबूं मोय मांदर बजायक आउर नाचे हूॅ नी जानोन। तोंय चईल जा।' पर करियो नहीं मानती है। करियो के जिद के अगे फागू झुक जाता है। दोनों अखरा जाते हैं। अखरा में फागू को फूलो रिझनी दोनो हाथ पकड़ नाचने ले जाती हैं। फागू को नाचता देख करियो भी उसी धारा में स्वभाविक रूप से शामिल हो जाती है। फागू महसूसता है वह आना नहीं चाहता था। और अब इसी में डूब गया। रत्रि का समय है। नाचने गाने में सब इतने मशगूल हैं। कि किसी को आभास ही नहीं है। कि किसके बगल में कौन है। एक दूजे के हाथों में हाथ है। अहम मुक्त और समय सून्य हो गया है। सब एक ही रंग में रंगें हैं। इस वक्त एक से बढ़ कर एक गीत, गीतों के राग, व लय ताल बद्धनाच नाच रहा है। जो जहॉ जैसे नाच रहा है वैसे ही नाचता रहता है। पकड़ इतनी मजबूत हो जाती है कि मूठ बंधा जाता है। यही सुमल नाच है। देवता आदमी, आदमी देवता बन जाता है। इन्सान के अंदर जब अच्छाई की चरम सीमा पराकाष्ठा पर पहुंच जाती है तो उसके अंदर देवता का रूप आ जाता है। इसकी सहज अभिव्यक्ति अखरा

है। जहां नाचते वक्त ग्राम देवी-करियो, सहजू और उसके संगी साथी एक हो जाते हैं। तो फर्क करना मुश्किल हो जाता है कि कौन देवता कौन आदमी है। और नाचते नचते सुबह हो जाता है। करियो अखरा से घर वापस आती है। घर के कामों में जूट जाती है। अखरा में दिन भर नाच गान चलता रहता है। शाम को करम देवता को कनहर नदी में विशर्जित किया जाता है। करम देवता आया और अपना काम कर वपस चला गया।

करियो और फागू भी वापस मुरली मंगराही गांव चले जाते हैं। शाम होती है। मुरली, ढोल, मंदर, नगाड़ा, डफली की आवाज सुन करियो बड़ी साहस कर फागू से कहती है। चल नी नाचे जाब ? फागू करियो की बात मान लेता है। पर रोज-रोज कभी इस गांव तो कभी उस गांव करमा नाचने जाना फागू के वश की बात नहीं थी सो करियो अकेले नाचने जाने लगी। करियो के रोज-रोज नाचने जाना कुछ लोगों के गले नहीं उतरने लगा उन्होंने फागू को उसकाना शुरू किया- 'तोंय का के मरद हकीस जे जनी के नी सम्हराय परत हीस? अगर तोर से नखे सभरत त कह।' ऐसा सुनते ही फागू को लगा कि कोई उसके कानो में गरम तेल डाल दिया है। फागू बौखला जाता है। और करियो से कहता है। कि आब तोंय नाचे गावेक छोड़ आउर घरे सलतंत लगय रह। करियो आश्चर्य भरे शब्दों में कहती है आइज तोके का भेलक जे तोंय इसन कहत आहीस। फागू मय कईह देलों से कईह देलों। करियो ने शांत भाव से कहा तोंय काले इसन उसन सोचतहीस। फागू पूरे आवेश में इसन उसन तोय का ले अखरा जाले बताओ ? और करियो को धिकारते हुए कहा अगर आइजे से अखरा गेले त देइख लेबे हो। करियो दृढ़ता पूर्वक फागू से कहती है। अखरा त गोटे दुनियॉ के लोग जायेंन आउर मोहों अखरा जाबू। फागू गुस्से से चीखते हुए। अगर तोंय अखरा गेले त देइख लेबे?

शाम होता है। करियो अपने सब कामों को जल्दी -जल्दी निपटाने की कोशिश में है। मगर आज उससे सब उलट पुलट हो जा रहा है। उसके भीतर एक द्वंद युद्ध चल रही है। अखरा जाय या न जाय पर उनमुक्त प्रेम की सरिता सारे तटबंधों को तोड़ अग्रसर है। भला इसे कोई कब तक बंधे रख सकता हैं। भदो की चांदनी रात चांद बादलों के साथ लुका छिपी खेल रहा है। और फागू भी करियो के साथ यही खेल खेल रहा है। करियो नदी तट पहुंच जाती है। भदो की गहरी कनहर नदी में उतरना संभव नहीं है। इस लिये करियो नदी पार करने के लिये अपने चिर परीचित स्थान घघ की ओर बढ़ जाती है। यह वही जगह है जहां वह सहजू के साथ मिलकर कई सपने देखा करती थी। करियो बहेरा पेड़ के पास जाती है। और उस पर लटके बेंदो लताओं को पकड़-पकड़ स्पर्श करती हुई पहचाने की कोशिश करती है कि एक चिकना मोटा लता उसके हाथों से छुआ जाता है। करियो झूम उठती है। और लता को पकड़ चूमलेती है। फिर उस लता से अपने उपर दोनों बाहों के नीचे एक फंदा डालती है। और लता को पकड़ पीछे की ओर चलती जाती है। और तब तक पीछे हटती जाती है। जब तक की लता में खींचाव नहीं आ जाता है। अब लता करियो को खींचने लगी है। करियो पीछे हटने में अपना पूरा शक्ति लगा देती है। पर अब और पीछे नहीं हटा जा सकता है। तब करियो लता में झूल जाती है। और करियो लता संग हवा की रफ्तार के साथ एक पल में नदी के उस पार पहुंच जाती है। उस पार पहंचते ही करियो रस्सी को झट ढील दे देती है। और रस्सी को कहुऐ पेड़ की डाली में फंसाकर बांध देती है। और अखरा नाचने पहुंच जाती है। इधर फागू देख लेता है। कि रानी कैसे पार होती है। वह गुस्सा में सोचता है। न रहेगी बांस न बजेगी बांसुरी और लता को अधकट्टा काट कर छोड़ देता है। करियो इन सब से बे खबर खूब नाचती गाती है। और भिनसरे वह मुरली मंगराही गांव वापस आने के लिये अखरा से निकल पड़ती है। रास्ते चलते गीत गाती है।

'जे मोके पार करी
सेके देबूं मूंगा मोती
जे मोके पार करी-2
औरो देबू हाइरे सोना मुहॉ के जबान।'

नदी पार करने के लिये जैसे ही करियो खिंची हुई बेंदो लता का फंदा अपने उपर डाल उस पर झूलती है। बिजली की रफ्तार के साथ लता बीच नदी में पहुँचते ही दो भागों में बंट जाती है। और नदी के बीच झाउह 'छपाक' की आवज नदी के आस पास पसर जाता है। नदी की गति निरंतर अपनी स्वभाविकता में बढ़ती चली कल-कल-कल-कल हचाकेंइसी आवाज में करियो समाहित हो गई। फागू पश्चताप में बड़बड़ाता है। यह क्या किया मैं ? करियो करियो करियो उसके अंदर जैसे गुंजता है। फिर अचानक चिल्लाता है -करियों जंगल झाड़, नदी नाला, खेत टांड़, गांव डहर तक यह अवाज जा कर टकराती है। फागू के दुःख से गांव वाले भी अफसोस करते हैं। किसी के आंखों में आंशु छलकता है। तो किसी को यह दृश्य बेचैन करता रहता है। कहां चली गई करियो ? क्या हो गया ? और करियो का सच मिथक में बदल गया। करियो नदी के संग हो गई। करियो और कनहर की कथा अमर हो गई।

❐❐

द्वारा श्री जवाहर मसीह,
शास्त्री नगर, कॉके रोड, रॉची ,
झारखण्ड 834008